P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-2) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

राजस्थानी लोक साहित्य में संस्कृत साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययनः प्रमुख विद्वान एवं उनके साहित्यिक ग्रन्थ

एकता
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
जयनारायण व्यास
विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

राजस्थान का साहित्य मुख्यतः संस्कृत एवं राजस्थानी भाषा में प्राप्त है। वैदिक संस्कृत से उत्पन्न संस्कृत भाषा में साहित्य सृजन की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है और इसी परम्परा का निर्वाह राजस्थानी साहित्य सृजन में भी दृष्टिगोचर होता है। राजस्थान में हुये शासक जिसमें महाराणा कुंभा से राजसिंह (1433–1680 ई.) के कालक्रम में अनेक संस्कृत ग्रन्थ उपलब्ध हुये इन ग्रंथों में संस्कृत भाषा का समावेश मिलता है। संस्कृत साहित्य में रचित प्रमुख ग्रन्थों में संगीतराज, सूडप्रबंध, चण्डीशतक वृत्ति, कामराजरतिसार इत्यादि।

मुख्य शब्द : साहित्य–सृजन, निर्वाह, दृष्टिगोचर, समावेश, महाराणा कुंभा, महाराणा राजसिंह, संगीतराज, सूडप्रबंध, चण्डीशतकवृत्ति, कामराजरतिसार, इत्यादि।

प्रस्तावना

राजस्थानी लोक साहित्य में संस्कृत ग्रन्थों से अनमोल ऐतिहासिक जानकारी मिलती है। जिनमें राजस्थान के मध्यकालीन धार्मिक और सामाजिक जीवन की स्वतन्त्र जानकारी हमें 'हम्मीर–महाकाव्य' से मिलती है। बीकानेर के लोगों के रहन–सहन, आमोद–प्रमोद, भोजन, उत्सव इत्यादि का वर्णन हमें भट्ट सदाशिव द्वारा रचित 'राजविनोद' से उपलब्ध होता है। संस्कृत ग्रन्थों में ही भट्टि द्वारा रचित 'भट्टिकाव्य' में 15वीं सदी के जैसलमेर की राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया। एकलिंगमहात्म्य मेवाड़ के महाराणा कुम्भा के द्वारा रचित बताया जाता है जो कि 15वीं शताब्दी के समाज संगठन का ज्ञान इससे अधिक उत्तम अन्य किसी कृति में नहीं मिलता। इसी प्रकार 16वीं शताब्दी की धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं की जानकारी मिलती है जिसका स्रोत कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्तन काव्यम्' है जो कि जयसोम द्वारा कृत है।[1]

'राजरत्नाकर' में महाराणा राजसिंह के समय के समाज का चित्रण मिलता है। 'अमरकाव्य वंशावली' व 'अमरसार' में मेवाड़ के आनन्द–प्रमोद व जन–जीवन की झांकी देखने को मिलती है।

राजस्थान में संस्कृत साहित्य को आगे बढ़ाने में यहाँ के राजा व महाराजाओं का अक्षुण्ण योगदान रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

इतिहास समाज का दर्पण होता है किसी भी देश, जाति के उत्थान–पतन, यश–अपयश आदि की जानकारी हमें उस समाज, काल के इतिहास साहित्यों से ही उपलब्ध होती है, राजस्थानी लोक साहित्य में संस्कृत ग्रन्थों का विशेष महत्व है इस साहित्य से हमें राजस्थान के राजा–महाराजाओं द्वारा अपने उत्कृष्ट किये कार्यों पर बनवाये जाने वाली कीर्तियों, प्रशस्ति तथा ग्रन्थों की जानकारी मिलती है साथ–ही–साथ उनके दैनिक जीवन, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवन की गतिविधियों को जानने के संस्कृत साहित्य अच्छे स्रोत हैं। इनको रचित करने वाले विद्वानों का भी विशेष योगदान है। इनमें प्रमुख हैं–गीत–गोविन्द, बाणभट्ट श्री कान्हव्यास, मण्डन इत्यादि प्रमुख है।

साहित्यावलोकन

श्यामलदास द्वारा रचित 'वीर–विनोद' भाग प्रथम पुस्तक का प्रकाशन उदयपुर से 1886 में किया गया। इस पुस्तक में मेवाड़ के राजाओं के इतिहास का विवरण है तथा एकलिंग की दक्षिण द्वार प्रशस्ति का भी उल्लेख मिलता है।

गौरीशंकर हीराचंद ओझा द्वारा लिखित 'उदयपुर राज्य का इतिहास' भाग प्रथम पुस्तक का प्रकाशन जोधपुर से 1994 में किया गया। इस पुस्तक में राजस्थानी संस्कृति का सम्पूर्ण विवरण मिलता है तथा मेवाड़ के इतिहास की पूर्ण जानकारी मिलती है।

डॉ. सीमा राठौड़ द्वारा रचित 'महाराणा कुम्भा की भारतीय संगीत को देन' पुस्तक का प्रकाशन जोधपुर से 2001 में किया गया। इस पुस्तक में प्रारम्भिक पृष्ठभूमि में महाराणा कुम्भा का ऐतिहासिक वृत्तान्त प्रस्तुत किया गया। इसमें कुंभा के कृतित्त्व का परिचय दिया गया। यह पुस्तक अपने विषय चयन की महत्ता के साथ–साथ महाराणा कुम्भा की संगीत साधनाओं तथा शास्त्रीय संगीत उपलब्धियों का विवेचन करता है।

डॉ. मोतीलाल मेनारिया के द्वारा 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' नामक ग्रन्थ का प्रकाशन 2016 में जोधपुर से किया गया जिसमें कुल 5 अध्याय है इन अध्यायों में राजस्थानी साहित्य में संस्कृत साहित्य के योगदान का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

संस्कृत–साहित्य के प्रमुख ग्रन्थ

संगीतराज

यह ग्रन्थ महाराजा कुंभा द्वारा विरचित सभी ग्रन्थों में वृहद्तम् एवं सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में अनेक पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध है जिसमें किसी रचनाकार का नाम 'कुंभकर्ण' मिलता है तो किसी का 'कालसेन'। इस ग्रन्थ की सरचना महाराणा कुंभकर्ण की है जिसका उल्लेख एकलिंग दक्षिण द्वार की प्रशस्ति में भी हुआ है।[2]

"दधौ गीतगोविन्दसंज्ञ प्रबंधे स्फुरचित्तवृत्तिर्नृव कुंभकर्ण
विनिर्माय विश्वोपकाराय शास्त्रं रसोल्लासिं
संगीतराजभिधान"[3]

यह ग्रन्थ भारतीय संगीत का परिचायक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में पाँच कोश हैं जिसमें प्रत्येक कोश में चार–चार उल्लासों का विवरण है। प्रत्येक उल्लास को पुनः चार परीक्षण भागों में विभक्त किया गया है। इस ग्रन्थ में 16000 श्लोक हैं। इसमें 5 रत्नकोश, 20 उल्लास व 80 परीक्षणों में विभक्त किया गया है।

प्रमुख रत्नकोश

1. **पाठ्यरत्नकोश** – इस अंश में मूलतः गीत के पाठ्यअंश पर विचार किया गया इसीलिए इसमें संगीत के साथ व्याकरण, छंद, अलंकार साहित्य आदि विषयों का समावेश है।
2. **गीतरत्नकोश** – यह विषय विस्तार की दृष्टि से संगीतराज का विशालतम भाग है जो पूरे ग्रन्थ का लगभग आधा भाग है। इस भाग में कुंभा द्वारा संगीत के उत्सनाद तत्व से लेकर श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, तान, वर्णन, अंलकार, जाति, राग एवं प्रबन्ध आदि विषयों पर विस्तृत शास्त्रार्थ किया है।
3. **वाद्यरत्नकोश** – इस में तट्, अनबद्ध, घन और सुशिर, चतुर्विधि वाद्यों का तालों एवं रागों के साथ विस्तृत वर्णन महाराणा कुम्भा द्वारा किया गया है। इसमें वीणा के 20 प्रकारों व मेवाड़ में प्रचलित लोकवाद्य 'रावणहत्था' का भी उल्लेख हुआ है। (नोटः यह भाग अभी अप्रकाशित है।)
4. **नृत्यरत्नकोश** – महाराणा कुम्भा ने अभिनय के विभिन्न प्रकार, नृत्य की सूक्ष्म मुद्राओं या शरीर के विभिन्न अंगों का सविस्तार सूक्ष्मतम वर्णन दिया है।
5. **रसरत्नकोश** – इसमें महाराणा कुम्भा ने अप्रत्यक्षतः संगीत को गीत, वाद्य और नृत्य के स्थूल क्षेत्र से ऊपर रस (अलौकिक आनन्द) के दिव्य धरातल पर प्रतिष्ठित किया है जो संगीत या किसी भी कला की अंतिम परिणिति है।[5]

सूडप्रबन्ध

सूडप्रबन्ध ग्रन्थ गीतगोविन्द का संगीतात्मक प्रकरण है इसकी रचना गीतगोविन्द के पदों की राग व ताल सम्बन्धी संगीतात्मक विवेचना के लिए की गई। इस ग्रन्थ का उल्लेख महाराणा कुम्भा के समय के ग्रन्थ 'एकलिंग महात्म्यम्' के काव्यमय खण्ड की 'कुम्भास्तुति' में दिया गया है साथ ही इसका उल्लेख कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति में भी मिलता है।[6]

गीतगोविन्द की रसिकप्रिया टीका

भारतीय संगीत में कृष्ण भक्ति सम्बन्धित गीतकाव्यों में जयदेवकृत 'गीतगोविन्द काव्यम्' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। गीतकोविन्द को विश्व साहित्य एवं संगीतशास्त्र के अनुसार ताल एवं राग–रागिनीबद्ध करते हुये मेवाड़ महाराणा कुंभा द्वारा उसकी टीका की है। यह टीका संगीत और साहित्य का संयोग है। टीका में निरूपित राग–रागनियों का विवरण ताल एवं लय सम्बन्धी उल्लेख नृत्य से सम्बन्धित नायक–नायिका भेद आदि विषयक विवरण, संगीतशास्त्र की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।[7]

इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति राजस्थान राज्य प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान उदयपुर में ग्रंथाक–1744/1 पर उपलब्ध है।

चण्डीशतक वृत्ति

यह ग्रन्थ महाकवि 'बाणभट्ट' कृत चण्डीशतक की टीका की प्रतिकृति है। इस ग्रन्थ में कुल 102 श्लोक है जिसका महाराणा कुंभा द्वारा विषद विवेचन किया है। यह ग्रन्थ चण्डिका देवी की उपासना से सम्बन्धित है। इस ग्रन्थ में वृत्ति के प्रत्येक पद की व्याकरणात्मक भाषायी एवं काव्य शास्त्रीय दृष्टि से व्याख्या करके समझाया है। यह ग्रन्थ संगीतशास्त्रीय ज्ञान का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।[8]

यह ग्रन्थ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में ग्रंथाक 94 पर उपलब्ध है। जहाँ से इसका प्रकाशन हो चुका है।

कामराजरतिसार

'कामराजरतिसार' ग्रन्थ कामशास्त्रोत्पत्ति से लेकर कामशास्त्र विषयक तत्वों का विवेचन करने वाला ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में कामशास्त्राधिकार के संदर्भ में गीत, वाद्य और नृत्य संगीत की तीनों विधाओं का उल्लेख किया है। ग्रन्थ के 18वें श्लोक में कुम्भा को 'संगीतराज का कर्त्ता'[9] एवं 21वें श्लोक में नाटकराज का कर्त्ता वर्णित किया गया है। इस ग्रन्थ में महाराणा कुम्भा का लेखक के रूप में परिचय भी दिया गया है।[10]

राजस्थान साहित्य में उपरोक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त संगीतरत्नाकर टीका, संगीतकमदीपिका एवं संगीत मीमांसा नामक टीकायें भी लिखी गई किन्तु इन रचनाओं से सम्बन्धित कोई पाण्डुलिपि उपलब्ध नहीं है।[11]

राजस्थानी साहित्य में प्रमुख विद्वान जिन्होंने संस्कृत साहित्य में अपना योगदान दिया

श्री कान्हव्यास

ये महाराणा कुम्भा के दरबारी कवि थे जिन्होंने 'एकलिंग महात्म्य' नामक कालजयी ग्रन्थ तथा कुंभलगढ़ अभिलेख की रचना की। इस ग्रन्थ का सम्बन्ध वायुपुराण से जोड़ा गया है। प्रत्येक ज्योतिष में 'इति श्री वायुपुराणे मेदपाटीये' उल्लेख है।[12] ग्रन्थ की स्तुतियों की भाषा परिमार्जित, शुद्ध और ललित है। कवि ने ग्रन्थ को दो भागों में बांटा–

1. प्रथम खण्ड–जो पौराणिक परम्परा का निर्वाह करते हुये पौराणिक शैली में है। इसमें शिव के माहत्म्य का वर्णन है।
2. द्वितीय खण्ड–काव्य की गरिमा को प्रकट करते हुए काव्यगत शैली में है। इसमें कुंभा के मेवाड़ शासकों का वर्णन है। इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठा, उदयपुर शाखा में ग्रंथांक–1477 पर सुरक्षित है।

अत्रिभट्ट एवं महेश भट्ट

ये अत्रिभट्ट मेवाड़ के महाराणा कुंभा के राज्याश्रित कवि थे। ये संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। इन्होंने कुंभा के समय कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति की रचना प्रारंभ की जिनकी मृत्यु के बाद इनके पुत्र महेश भट्ट द्वारा इसे पूरा किया गया। महेश द्वारा श्रीएकलिंगजी की दक्षिण द्वार प्रशस्ति वि.सं. 1545 व रामस्वामी मंदिर जावर की प्रशस्ति वि.सं. 1554 व घोसुण्डा शृंगार देवी प्रशस्ति 1561 की भी रचना की। इनके द्वारा बनी प्रशस्तियों में कवि की दृष्टि बड़ी सूक्ष्म व इसमें अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन अपेक्षाकृत कम है। कुंभा के उपरान्त ये रायमल के समकालीन थे। रायमल द्वारा इन्हें 'रत्नखेड़ा ग्राम' दान में दिया गया।[13]

सूत्रधार मंडन

मेवाड़ में राज्याश्रित विद्वानों में मंडन जो कि भारतीय वास्तुशास्त्र के संपादकों में सबसे से महत्त्वपूर्ण विद्वान रहे। ये भंगोरा गोत्रीय भारद्वाज कुल से सम्बन्धित थे। ये संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। मंडन द्वारा संहिता विषयों पर लेखन किया जिसमें न केवल शिल्प और वास्तु बल्कि ज्योतिष, शकुन, अंग, स्फुटन, भूमि–परीक्षण जैसे विषय भी आते हैं।[14]

मंडन द्वारा रचित ग्रन्थ

1. प्रासाद मंडन (शिल्पकला) से सम्बन्धित था।
2. वास्तु मंडन (वास्तु शास्त्र) का वर्णन मिलता है।
3. रूप मंडन (इन ग्रन्थ में मूर्तिकला के सभी महत्त्वपूर्ण पक्षों का विवरण मिलता है।)
4. देवतामूर्ति प्रकरणम्–इस ग्रन्थ में प्रतिमा लक्षण व प्रतिमा निर्माण सम्बन्धी निर्देश दिये गये हैं।
5. राजवल्लभ मंडन–इस ग्रन्थ में सामान्य नागरिकों के आवासीय गृहों से लेकर राजप्रसाद एवं नगर रचना का उल्लेख हुआ है।
6. वास्तुसार–इस ग्रन्थ में दुर्ग, भवन व नगर निर्माण सम्बन्धी नियमों का उल्लेख है।
7. वास्तुशास्त्र–इस ग्रन्थ में स्थापत्य से सम्बन्धित जानकारियाँ है।

चक्रपाणि मिश्र

चक्रपाणि मिश्र महाराणा प्रताप के दरबारी कवि थे जिन्हें वेद, उपनिषद् व धर्मशास्त्रों का अच्छा ज्ञान था। ये संस्कृत साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों में से एक थे इनके द्वारा अनेक ग्रन्थों की रचना की गई जिनमें–

विश्ववल्लभ

इस ग्रन्थ में जलस्रोतों तथा जलाशय एवं प्रकृति व औषधीय गुण–धर्मों की जानकारी मिलती है। इसमें 9 उल्लासों का वर्णन है।

मुहूर्तमाला (1632 ई.)

इस ग्रन्थ में ज्योतिष की परम्परा के अनुसार तिथि वार, नक्षत्र, गोचरादि, कार्य संस्कारों का वर्णन मिलता है। महाराणा प्रताप ज्योतिष विद्या में विश्वास रखते थे। इस ग्रन्थ में सर्वाधिक चर्चा विवाह के सम्बन्ध में हुई है।

राज्याभिषेक पद्धति

इस ग्रन्थ का अन्य नाम 'भूपाभिषेक पद्धति' है। इस ग्रन्थ की रचना का आधार राजा के सिंहासनारूढ़ होते समय किये जाने वाले विभिन्न अनुष्ठानों, कृत्यों पर आधारित है।[15]

पं. जीवन्धर

ये राजा अमरसिंह के समकालीन थे। इनके प्रमुख ग्रन्थ अमरसार में चित्तौड़ दुर्ग के संदर्भ में विस्तार से लिखा हुआ है। पं. जीवन्धर ने अमरसिंह के मंत्री डूंगर की प्रेरणा पर इस ग्रन्थ की रचना की।[16]

रघुनाथ पालीवाल

इनके द्वारा 'जगतसिंह काव्यम्' ग्रन्थ लिखा गया। इस ग्रन्थ में जगतसिंह को नायक मानकर उनके पौरूषयुक्त क्रियाकलापों एवं दानपुण्यों का वर्णन किया गया। इस ग्रन्थ की दो प्रतिलिपियाँ राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान उदयपुर में ग्रंथाक 1509 एवं 7015 पर संग्रहित है।[17]

कवि विश्वनाथ

इनके द्वारा 'जगत्प्रकाश' नामक ग्रन्थ की रचना की गई। जिसका उल्लेख गौरी शंकर हीराचन्द ओझाजी ने किया। इस के द्वारा जगत्सिंह का यशवर्णन किया गया। इसमें जगत्सिंह को बड़ा 'दानवीर' कहा गया।[18]

भट्टमोहन

'जगत्सिंहाष्टक' यह एक प्रशस्ति काव्य है जिसमें महाराणा जगतसिंह की आशीर्वादात्मक स्तुति की गई है। इस ग्रन्थ से महाराणा जगतसिंह के दान–पुण्य के कार्यों की जानकारी उपलब्ध होती है।

महाकवि रणछोड़ भट्ट

रणछोड़ भट्ट तैलंग ब्राह्मण थे। इन्होंने 'राजप्रशस्ति महाकाव्यम्' नामक ग्रन्थ की संस्कृत में रचना की। रणछोड़ द्वारा यह ग्रन्थ महाराणा राजसिंह की आज्ञा पर लिखा गया जिसमें 24 सर्ग व 1106 श्लोक है। इस महाकाव्य का मुख्य विषय महाराणा राजसिंह का जीवन चरित्र है जिसमें प्रथम 5 सर्गों में मेवाड़ के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डाला गया है। यह ग्रन्थ 'महाभारत' के समान है। रणछोड़भट्ट कृत 'अमरकाव्यम् वंशावली' में मेवाड़ के राजवंश का क्रमबद्ध इतिहास है। इसी ग्रन्थ को 'वंशावली' भी कहा गया है।[19]

सदाशिव नागर

सदाशिव नागर द्वारा 'राजरत्नाकर' महाकाव्य लिखा गया जिसमें 23 सर्ग हैं। यह एक ऐतिहासिक महाकाव्य है। ये महाराणा राजसिंह के समकालीन थे। इस ग्रन्थ की विषयवस्तु राजसिंह द्वारा कांकरोली के निकट रजासमुद्र के निर्माण एवं उसके प्रतिष्ठा महोत्सव से सम्बन्धित है। इस ग्रन्थ की रचना लगभग सं. 1734 (1677 ई.) में हुई थी।

लालभट्ट

लालभट्ट ने 'राजसिंह प्रभोवर्णनम' नामक संस्कृत भाषा के इस ग्रन्थ की रचना की इसमें 101 श्लोक है जो महाराणा राजसिंह को आशीर्वाद देने के रूप में लिखे गए हैं। इस ग्रन्थ की लिपि देवनागरी है। इस ग्रन्थ में राजसिंह के प्रभाव का वर्णन किया गया।[20]

जैन कवि मेघविजय

मेवाड़ के साहित्य सृजन में जैन साधुओं का भी प्रभुत्व रहा है जिनके द्वारा रचित रचनाओं से भी संस्कृत साहित्य में वृद्धि हुई। मेघविजय द्वारा 'प्रणीत' ग्रन्थ उपलब्ध है। इस ग्रन्थ में मेवाड़ शासकों की वंशावली 57 श्लोकों में दी गई। यह ग्रन्थ मेवाड़ की वंशावली की जानकारी का प्रमुख स्रोत है।[21]

निष्कर्ष

सारांशतः राजस्थानी साहित्य में संस्कृत साहित्य का अविस्मरणीय योगदान है। इन संस्कृत ग्रन्थों की सहायता से हमें राजस्थान में हुये महाराजाओं की उपलब्धियाँ, शौर्य–वीरता, प्रशस्तियों का उल्लेख, वंशावलियों, युद्धों में पराक्रम, दैनिक जीवन से जुड़े पहलुओं को जानने में आसानी होती है तथा इन ग्रन्थों से उनके द्वारा जो उपलब्धियाँ ग्रहण की गई उसे इतिहास के गौरव में पुनः जानने में मदद मिलती है।

इन साहित्यों से राजाओं द्वारा अपनाये जाने वाली नीतियाँ (हल्दीघाटी युद्ध/उत्तराधिकार) आज भी महत्त्व रखती है। इस साहित्य में जो प्रशस्तियों में कवितायें या लेख लिखे उन्हें आकर्षक व रोधक कर के लिखा गया है।

अंत टिप्पणी

1. *श्यामलदास; वीर–विनोद–भाग प्रथम, उदयपुर, 1886, पृ. 420.*
2. *राठौड़, डॉ. सीमा; महाराणा कुंभा की भारतीय संगीत को देन, जोधपुर, 2001, पृ. 33–34.*
3. *असावा, गौरीशंकर; 15वीं शताब्दी का मेवाड़, जयपुर, 1986, पृ. 142.*
4. *ओझा, गौरीशंकर हीराचंद; उदयपुर राज्य का इतिहास भाग प्रथम, जोधपुर, 1994, पृ. 313–314.*
5. *शर्मा, डॉ. देवीदत्त; मेवाड़ का धार्मिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, उदयपुर, 1989, पृ. 40.*
6. *श्यामलदास; वीर–विनोद–भाग प्रथम, उदयपुर, 1886, पृ. 420.*
7. *कुम्भकर्ण चण्डीशतक, पृ. 155, ग्रन्थांक–9 (राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर में संगृहित)*
8. *राठौड़, डॉ. सीमा; महाराणा कुम्भा की भारतीय संगीत को देन, जोधपुर, 2001, पृ. 137–138.*
9. *डॉ. तारामंगल; महाराणा कुम्भा और उनका काल, जोधपुर, 1984, पृ. 159.*
10. *शर्मा, डॉ. लता; रसरत्नकोश, दिल्ली, 2011, पृ. 73.*
11. *असावा, गौरीशंकर; 15वीं शताब्दी का मेवाड़, जयपुर, 1986, पृ. 144.*
12. *कुम्भकर्ण चण्डीशतक, पृ. 155, ग्रन्थांक–9 (राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर में सुरक्षित)*
13. *शर्मा, डॉ. देवीदत्त; मेवाड़ का धार्मिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, उदयपुर, 1989, पृ. 5–6 व 35–36.*
14. *मण्डन, प्रासादमण्डन, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर, शर्मा, डॉ. भास्कर क्षोत्रियं द्वारा अनुवादित, पृ. 36.*
15. *डॉ. तारामंगल; महाराणा कुम्भा और उनका काल, जोधपुर, 1984, पृ. 160.*
16. *श्रीवास्तव, डॉ. बलराम; रूपमंडन, जोधपुर, 1992, अध्याय प्रथम श्लोक–2, पृ. 18.*
17. *मण्डन, राजवल्लभ, अध्याय प्रथम, श्लोक–1, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर में संग्रहित प्रतिलिपि का प्रथम–पत्र.*
18. *ओझा, गौरीशंकर हीराचंद; उदयपुर राज्य का इतिहास, जोधपुर, 1994, भाग प्रथम, पृ. 315.*
19. *पालीवाल, डॉ. देवीलाल; महाराणा प्रताप महान्, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान उदयपुर में सुरक्षित, पृ. 149.*
20. *भाटी, डॉ. हुकमसिंह; मेवाड़ इतिहास के कतिपय पहलू, उदयपुर 1987, पृ. 20.*
21. *जोशी, डॉ. मनोरमा; महाराणा अमरसिंह प्रथम और उसका समय, उदयपुर, 1992, पृ. 98–99.*